RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष-12वां अंक 47

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

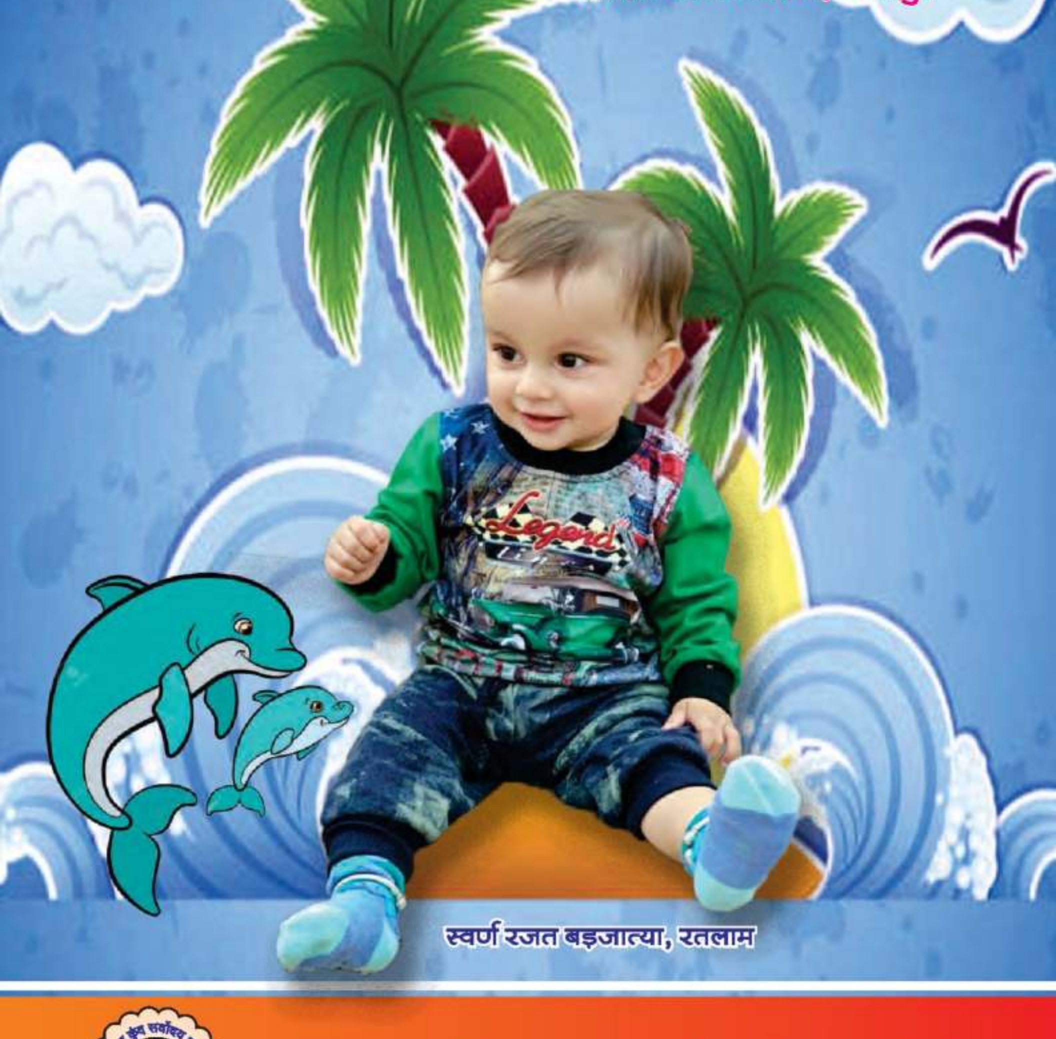

स्वर्ण रजत बड़जात्या, रतलाम

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

इन चित्रों का भाव समझने के लिये पेज नंबर .... देखें।

इन चित्रों का भाव जानने के लिये देखें पेज नं.28

बाल वर्ग को तीन नवीन उपहार

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा निर्मित बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 27 वाँ पुष्प

माँ सुनाओ मुझे वो कहानी

आध्यात्मिक लोरी गीतों का अनुपम वीडियो संग्रह

वीडियो निर्माण में अर्थ सहयोगी

श्री ब्रजलाल दलीचन्दजी हथाया परिवार, ग्रांटरोड - मुम्बई
श्री भूपेन्द्र एच. शाह, मुम्बई श्री नरेश सिंघई, नागपुर
श्री सुरेन्द्र पाटोदी, कोलकाता, श्री साकेत कमल बड़जात्या, दादर, मुम्बई
श्री राजूभाई एम. शाह, दादर, मुम्बई श्रीमति नेहा संदेश जैन, जबलपुर
डॉ.एस.सी.जैन श्री निशांत जैन, जबलपुर, श्री विवेक डेवड़िया, नागपुर

निर्देशन
श्री विराग शास्त्री, जबलपुर

गीत रचना : ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना श्री विराग शास्त्री, जबलपुर श्री विमल जैन, छिन्दवाड़ा म.प्र.

बालवर्ग धार्मिक संस्कार प्रेरक 28वाँ पुष्प

हमारी प्यारी पाठशाला

शिक्षाप्रद कविताओं का अनुपम संकलन

(Animation Video)

काव्य रचना एवं
वीडियो परिकल्पना :
विराग शास्त्री
जबलपुर 9300642434

वीडियो निर्माण में अर्थ सहयोगी

श्री फतहलालजी जैन , मलाड, मुम्बई
श्री दिलीप सेठी, कोलकाता
श्रीमति शैली डॉ. रवीश जैन, सनावद म.प्र.
श्रीमति आरती प्रसंग जैन, खण्डवा

हमारे उत्पाद -

- नो मॉस रिफिल
- नो मॉस ऑयल
- शोधी हर्र
- बलकारी चटनी

प्राप्ति हेतु संपर्क करें
7000104951

हमारे पास संस्था द्वारा निर्मित बाल संस्कार प्रेरक गीतों, कविताओं, पूजन, कहानियों, कम्प्यूटर गेम के अनेक वीडियो सीडी और साहित्य उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र. मोबाइल : 9300642434
E-mail : kahansandesh@gmail.com | website : sarvodayasanskar.com | Youtube channel : sarvodayasanskar

ग्रीष्मकालीन शिविरों की झलकियां

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

जुलाई - सितंबर 2018

प्रकाशक

श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक

विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक

स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स

गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक

श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर

डॉ. उज्ज्वला शहा - पंडित दिनेश शहा, मुम्बई

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

श्रीमती आरती जैन, कानपुर

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर

श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था

स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

''चहकती चेतना''

सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,

फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002

9300642434, 09373294684

chehaktichetna@yahoo.com

क्र.	विषय	पेज
1.	सूची	1
2.	सप्त व्यसन और उनके भोगने का फल	2
3.	संपादकीय	3
4.	पाकिस्तान में जैन मंदिर	4
5.	मोबाईल का दर्द / चोरी	5
6.	पुत्र का पत्र पिता के नाम	6
7.	Story of king / Religion	7
8.	अपराध	8-9
9.	भारतीय संस्कृति और श्रमण परंपरा	10-11
10.	तीर्थयात्रा ऐसी हो / बेईमान	12
11.	एक क्षण और ...	13
12.	मोबाईल की जिद ...	14
13.	महामंत्री साह नानू	15
14.	भाग्य	16-17
15.	कविता - वीर शासन जयंती	18
16.	भाई का पत्र बहन के नाम	19-20
17.	सच्चा आनंद	21-22
18.	सेंधा नमक	23-24
19.	समाचार	25-26
20.	एक शिविर ऐसा भी	27
21.	चहकती चेतना सदस्य	28
22.	मैगी नूडल्स में छिपकली......	29
23.	कविता - टी.वी.	30
24.	जन्म दिवस	31
25.	पंचकल्याणक महोत्सव	32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)

1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।

पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क्र. - 1937000101030106

IFS CODE : PUBN0193700

सप्त व्यसन और उनके भोगने का फल

जुआ खेलना

मांस खाना

मदिरापान करना

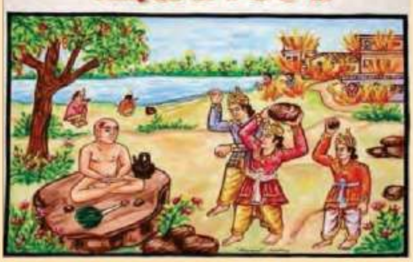

वेश्या गमन करना

शिकार करना

चोरी करना

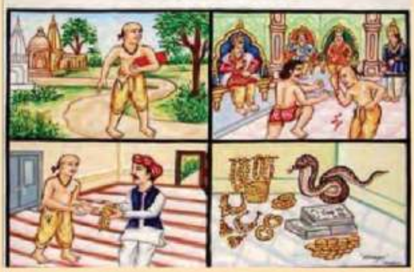

पर-स्त्री सेवन करना

सदा सावधान रहिये
और
सप्त व्यसन से
मुक्त जीवन जियें
- यही हमारा गौरव है ।

संपादकीय -

पता नहीं ऐसा क्यों हो रहा है .... ?

भारत देश को संस्कारों और सभ्यता का देश कहा जाता है। यहाँ की भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ एक अनोखा वातावरण का निर्माण करतीं हैं। अनेक धर्मों के लोग अनेक देवी-देवताओं की आराधना अपने तरीके से करते हैं। सभी धर्मों में हिंसा, झूठ, चोरी आदि कार्यों को पाप माना गया है और इन पापों से बचने के लिये और अपने मन की आन्तरिक शुद्धि के लिये सभी धर्मों के संत / गुरु / विद्वान प्रवचनों के माध्यम से निरन्तर उपदेश दे रहे हैं। गली-गली में धार्मिक आयोजन, श्रीमदभागवत कथायें, विश्वशांति महायज्ञ, जैसे सैकड़ों कार्यक्रम और टीवी के धार्मिक चैनलों पर सुबह से शाम तक जीवन सुधारने का उपदेश दिया जा रहा है। इस हिसाब से हमारे देश में न्याय और ईमानदारी का साम्राज्य होना चाहिये। पर आश्चर्य है कि विश्वगुरु कहलाने वाले इस भारत देश में चारों तरफ अन्याय और अनीति दिखाई दे रही है।

भ्रष्टाचार और अन्याय की बातें अब नेताओं से निकलकर आम जनता तक पहुँच गईं हैं। प्रधानमंत्री द्वारा आम जनता को आधुनिक सुविधाओं देने के लिये नई ट्रेन चलाई गई। दस दिन के अन्दर जनता ने नल, टोंटी निकाल लिये और सीटें खराब कर दीं। प्रधानमंत्री द्वारा मेरठ - दिल्ली को जोड़ने वाला देश का अति आधुनिक एक्सप्रेस हाइवे की शुरुआत की गई। यह पूरे देश का अनोखा हाईवे है। परन्तु आश्चर्य विकास की कमी रोना रोने वाली आम जनता ने मात्र एक सप्ताह में एक्सप्रेस वे के सोलर, लोहे की रेलिंग, टाइल्स आदि लगभग 5 करोड़ की चोरी कर ली।

प्रधानमंत्री की पहल पर स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत योजना का शुभारम्भ हुआ। परन्तु हमारी साफ न रहने की आदत आज भी जारी है। ट्रेनों में कचरा फैलाना, घर का कचरा सड़कों पर फेंकना आदि जैसे कार्य बेशर्मी से जारी हैं। अधिकांश सरकारी कर्मचारी/ अध्यापक काम न करने का वेतन लेने में अपना गौरव समझते हैं। अटेन्डेन्स रजिस्टर में साइन न करके बाहर घूमने में अपनी चतुराई समझता है। आश्चर्य यह है कि सम्पूर्ण विश्व को आध्यात्म का संदेश देने वाले भारत में नैतिकता का पतन हो रहा है। आज बच्चों में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने की आवश्यकता है। जापान जैसे देश में एक सरकारी कर्मचारी ने निश्चित समय से पहले सीट छोड़ी तो उसके अधिकारियों ने नेशनल टीवी पर लाइव इस अपराध की माफी मांगी।

छोटी-छोटी सी बातों पर हत्यायें हो रहीं हैं, नन्हीं बच्चियों से बलात्कार किये जा रहे हैं, लड़कियों को परेशान किया जा रहा है, नारी को देवी मानने वाले देश में लड़कियाँ खुलेआम शराब खरीद रहीं हैं। पता नहीं भगवन्तों, महापुरुषों और अनगिनत साधु संतों के मेरे देश में आखिर यह क्यों हो रहा है .... ? इसका एक मात्र कारण है हम शिक्षा पर तो ध्यान दे रहे हैं पर संस्कार पर नहीं और कोई भी शिक्षा संस्कार के बिना अधूरी है।

आज अपने समाज और परिवार में इन छोटी-छोटी सी बातों को सिखाने की आवश्यकता है। नैतिक संस्कारों युक्त समाज ही आध्यात्म विद्या का पात्र बन सकेगा। आइये इसकी शुरुआत हम अपने ही परिवार से करें ...

विराग शास्त्री, जबलपुर

पाकिस्तान में जैन मंदिर

पाकिस्तान के लाहौर निवासी प्रसिद्ध इतिहास जानकार श्री शाहिद शब्बीर ने फेस बुक पर एक रोचक जानकारी दी, जिसे पढ़कर हर जैनी को अपनी विरासत पर गर्व होगा। शाहिद शब्बीर पाकिस्तान के प्राचीन मंदिरों पर शोध कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि जैन धर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है। इसकी सत्ता के प्रमाण सम्पूर्ण विश्व के अनेक देशों में पाये गये हैं। शाहिद शब्बीर ने पाकिस्तान के जैन मंदिर, जैन स्थापत्य कला, जैन तीर्थंकरों के अवशेषों पर बहुत जानकारी एकत्रित की है। उन्होंने **Save Historical Places of Pakistan** नाम से संचालित इस फेस बुक पेज पर बताया कि पाकिस्तान के पंजाब के सिन्ध प्रान्त में जैन धर्म को मानने वाले बहुत लोग यहाँ निवास करते थे। गुजरांवाला, मुलतान, रावलपिण्डी, लाहौर और इस्लामाबाद में बहुत सारे जैन मंदिर, जैन पाठशालायें एवं जैन भवन थे, जो अभी खण्डहर के रूप में हैं। जैन समाज न होने से सरकार ने भी इनकी देखरेख नहीं की, पर एक काम सरकार ने अच्छा किया कि सभी उपलब्ध जैन प्रतिमाओं को सम्मानपूर्वक लाहौर के एक संग्रहालय में रखवा दिया है।

रावलपिंडी स्थित जैन कन्या पाठशाला
यहाँ अब मदरसा चल रहा है।

मोबाइल का दर्द

एक फैक्टरी मालिक राघवेन्द्र का जीवन अत्यन्त व्यस्त था। उसके मोबाइल फोन का स्विच कभी बन्द नहीं रह पाता। भोजन करते समय भी वह खाली नहीं रह पाता, दो चार फोन आ ही जाते। सोते समय भी तकिया के पास मोबाइल रहता। नींद से उठकर फोन पर बात करता रहता।

पत्नी ने कई बार समझाया, परन्तु वह न माना। अन्त में सिरदर्द रहने लगा। उसके ऊपर भी वह ध्यान न देता। दर्द निवारक गोलियाँ खा-खाकर काम करता रहता।

एक बार सिर भयंकर दर्द हुआ। गोलियाँ भी काम नहीं कर रहीं थीं। जाँच कराने पर मालूम हुआ कि मस्तिष्क में ट्यूमर हो रहा है।

घबराया और सावधान हुआ। चिकित्सक की सलाह के अनुसार मोबाइल पर बातचीत करना बन्द कर दिया।

भाग्य से उसे एक आध्यात्मिक आरोग्य सदन का पता लगा। वहाँ उसने जाकर छह माह चिकित्सा ली। एकान्त मिलने पर उसने आत्मा-परमात्मा, धर्म आदि पर विचार किया। धन की असारता को समझा। तब उसे बचपन में दी जाने वाली दादी माँ की शिक्षायें याद आने लगीं।

1. न्याय कमाओ, विवेक से खर्च करो व सन्तोष से रहो।

2. आवश्यकता से अधिक कमाना भी भूख से अधिक खाने के समान हानिहारक है।

उसने ठीक होने के बाद व्यापार को सीमित किया, चर्या को सुधारा और व्यवस्थित किया। धर्म एवं परोपकार में भी ध्यान दिया। फिर तो उसे शान्ति भी मिली और यश भी।

चोरी

एक तेरह वर्ष का बालक स्कूल से लौट रहा था। उसे रास्ते में सड़क किनारे एक मोबाइल की सिम पड़ी मिली। उसने उसे उठाकर अपने मोबाइल में डाल ली। उसमें बेलेन्स भी था। उसने किसी से यह बात नहीं कही। परन्तु उस मोबाइल वाले ने उसकी चोरी की रिपोर्ट लिखा दी थी इसलिये जैसे ही उसने उस सिम का उपयोग किया तुरन्त पुलिस को पता चल गया।

पुलिस आई और उसे पकड़कर ले गई। उससे पूछा गया तब उसने रोते हुये सच बता दिया। कोतवाल ने उसे सीधा बच्चा समझकर छोड़ तो दिया, परन्तु उसे बहुत बुरा लगा और उसने नियम ले लिया -

किसी की पड़ी हुई वस्तु को नहीं उठायेगा। यदि संभव हुआ तो उसके मालिक तक पहुँचायेगा या थाने में जमा करा देगा। स्वयं के उपयोग में कदापि नहीं लेगा।

- लघु बोध कथायें - ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

पुत्र का पत्र पिता के नाम

एकमात्र पुत्र अमेरिका में एक बड़ी कम्पनी में जॉब कर रहा था। विवाह करके अपनी पत्नी को अमेरिका ले गये। उसके दो बच्चे भी उनके साथ ही रहते थे। उसके बूढ़े माँ-बाप भारत के एक छोटे से शहर में रहते थे और अधिक उम्र होने से बीमार भी रहने लगे थे। पुत्र रुपये भेजकर ही सहायता कर रहा था जबकि माँ-बाप को परिवार की देखभाल की आवश्यकता थी। अकेले रहकर उनका निर्वाह होना मुश्किल हो रहा था। लेकिन बेटा पिता के पास नहीं आ रहा था । पुत्र ने एक पत्र अपने पिता को लिखा -

पूज्य पापाजी और मम्मीजी,

चरण स्पर्श। आपके आशीर्वाद से आपकी भावनाओं/ इच्छानुसार मैं यहीं अमेरिका में अपने काम में व्यस्त हूँ। यहाँ रुपया, बंगला, कार सभी साधन हैं, यदि नहीं है तो वह है समय।

मैं आपसे मिलना चाहता हूँ, आपके पास बैठकर बातें करना चाहता हूँ। परन्तु अमेरिका से इतनी दूर आना सम्भव नहीं है, बच्चों की पढ़ाई और ऑफिस का काम करना मजबूरी बन गई है। क्या करूँ, कैसे कहूँ चाहकर भी स्वर्ग जैसी जन्मभूमि और अपने माँ-पिता के पास नहीं आ सकता।

पापाजी! मेरे पास व्हाट्सएप पर अनेक तरह के सन्देश आते हैं - कि माँ-बाप सब कुछ बेचकर भी बच्चों को पढ़ाते हैं और बच्चे उन्हें छोड़कर विदेश चले जाते हैं। माँ-बाप वृद्धाश्रम में रहकर समय काटते हैं, पर बेटे कोई काम नहीं आते हैं।

पर पापा! मैं कहाँ जानता था कि इंजीनियरिंग क्या होती है ? मैं कहाँ जानता था कि पैसे की कीमत क्या होती है ? मुझे कहाँ पता था कि अमेरिका कहाँ है ? मेरा कॉलेज, पैसा और अमेरिका तो बस आपकी गोद ही थी न...!

आपने ही मंदिर न भेजकर स्कूल भेजा, पाठशाला नहीं, कोचिंग भेजा। जब कभी मैं मंदिर के किसी कार्यक्रम को देखकर घर पर देर से आता तो आप ही मुझे डांटते थे कि मंदिर जीवन में काम नहीं आयेगा। पढ़ाई पर ध्यान दो। आपने अपने मन की दबी इच्छाओं को पूरा करने इंजीनियरिंग / पैसा / पद की कीमत सिखाई।

मम्मी भी दूध पिलाते हुये कहती थी - मेरा राजा बेटा! बड़ा आदमी बनेगा, गाड़ी होगी, बंगला होगा, हवा में उड़ेगा। मेरी पढ़ाई के लिये उन्होंने अपने गहने तक बेच दिये थे।

दो साल पहले आप दोनों अमेरिका आये थे, परन्तु यहाँ सामाजिक वातावरण नहीं था, पड़ोसी भी नहीं, दिन भर बोर लगता था आपको तो आप ही जल्दी वापस चले गये थे।

मेरे प्यारे पापा ! मैं आपकी सेवा नहीं कर पा रहा, मैं बीमारी में दवा देने नहीं आ पा रहा, मैं चाहकर भी पुत्र धर्म नहीं निभा पा रहा हूँ, मैं हजारों किलोमीटर दूर बैठकर बंगले में सारी सुख सुविधाओं के बीच हूँ और आप उसी पुराने मकान में ...।

मैं आपसे बस इतना पूछना चाहता हूँ कि इसका सारा दोष क्या सिर्फ मेरा है ?

साभार - समर्पण

THE STORY OF KING

Once there was a king. He want to hunt in the Jungle. He met a saint in the Jungle and bowed his head to him.

The saint said - 'O king! To hunt is a sin Such a sin will take you to hell where is lot of pain and unhappiness.

The king cried by heairng this and asked the Saint ' My Lord!how can I wipe out my sins ? And how can I be happy ?'

The saint said, 'O King! The happiness is within you. Give up hunting and learn true nature of your soul. It will give you happiness." The King then gave up hunting. He learnt the int ricate Knowledge of the nature of soul from the saint and become very happy.

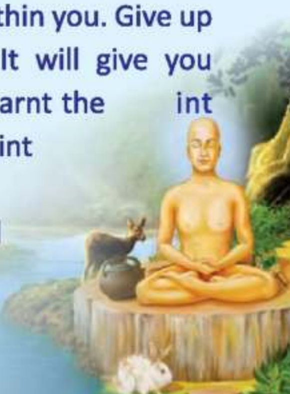

In the end he attained libertion of his soul from the world and attained " Moksha."

Give up sin, understand you soul and be happy.

RELIGION

I want to be happy.
Those who follow religion become happy.
Those who do not follow religion become unhappy.
I want to be religious.
Every soul can follow religion.
Body cannot follow religion of soul.
I am Jiva and therefore can do religious work.
The Body is Ajiva and therefore cannot do religious work.
Jiva is a Dravya (substance).
Religion is its Paryaya (State).

कथा सुनो पुराण की -

अपराध

तीर्थंकर अरनाथ के समय चक्रवर्ती सुभौम हुआ। सुभौम चक्रवर्ती के भव के तीन भव पूर्व वह भरत क्षेत्र में भूपाल नाम का राजा था। एक बार शत्रु से युद्ध हार जाने पर उसका अपमान हुआ और उसे संसार से वैराग्य हो गया और उसने आचार्य संभूत मुनिराज से मुनि दीक्षा ले ली और घोर तप करने लगा। तप करते समय भी वह अपनी पराजय का अपमान नहीं भूल पाया था, उसने कषाय में यह भावना की कि यदि मेरे तप का कुछ फल हो तो मैं अगली पर्यायों में चक्रवर्ती बनूँ। जीवन के अन्त में सन्यास मरण कर वह महाशुक्र स्वर्ग में देव बना। भूपाल के जीव ने देवगति की आयु पूरी कर अयोध्या नगर के इक्ष्वाकुवंशी राजा सहस्रबाहु की रानी चित्रमति के गर्भ से सुभौम के रूप जन्म लिया। एक बैर के कारण राजा सहस्रबाहु के चचेरे भाई जमदग्नि के दो पुत्रों इन्द्र और श्वेतराम ने राजा सहस्रबाहु की हत्या कर दी। डर के कारण सहस्रबाहु की पत्नी जंगल में आकर छिप गई और इसी जंगल में सुभौम का जन्म हुआ। एक दिन रानी चित्रमति ने मुनिराज सुबन्धु से पूछा - हे स्वामिन्! जब मेरे इस पुत्र ने जन्म लिया तो पृथ्वी को स्पर्श किया था। इस लक्षण से इस बालक का क्या भविष्य मालूम होता है? मुनिराज ने कहा - यह बालक सोलहवें वर्ष में चक्रवर्ती होगा। इसके लक्षण के रूप में यह बालक जलते हुये चूल्हे पर रखी गरम घी में तल रहीं पुड़ी को निकालकर खा लेगा।

उस बालक ने जन्म के तुरन्त धरती को स्पर्श किया था इसलिये उसके मामा शाण्डिल्य ने इसका नाम सुभौम रखा था।

उधर इन्द्र और श्वेतराम ने युद्धकौशल से अनेक राजाओं को जीतकर पृथ्वी का भोग किया। उन्होंने इक्कीस बार क्षत्रिय वंश को नष्ट किया और अपने हाथ से मारे हुये राजाओं के दांत एकत्रित कर एक खम्भे में रखते रहे। एक दिन एक निमित्तज्ञानी ने दोनों भाईयों को बताया कि तुम्हारे शत्रु का जन्म हो गया है। इस शत्रु का पता लगाने के लिये निमित्तज्ञानी ने कहा कि आप उत्तम भोजन कराने वाली एक विशाल भोजनशाला खुलवायें जो भी भोजन करने आयें उन्हें वे दांत दिखलाकर भोजन कराया जाये। जिस व्यक्ति के देखने से दांत चावल के रूप बदल जायेंगे वही व्यक्ति तुम्हारी मृत्यु का कारण होगा। इस तरह प्रतिदिन हजारों पुरुष भोजन करने आने लगे। इधर सुभौम

की माँ ने सुभौम के पिता की हत्या की घटना सुभौम को बता दी थी।

सुभौम के चक्रवर्ती बनने का समय आ चुका था। वह अपने विशेष मित्रों के साथ वेश बनाकर अयोध्या की ओर चला और भोजनशाला पहुँच गया। कर्मचारियों ने उन्हें उच्च आसन पर बिठाया और उन्हें मारे हुये राजाओं के दांत दिखाये तो सुभौम के प्रभाव से सभी दांत चावल के रूप में बदल गये। सेवकों ने तुरन्त यह समाचार राजा को दिया और राजा के आदेश पर बहुत बलवान सैनिकों को सुभौम को पकड़ने के लिये भेजा गया। सुभौम की रक्षा तो व्यंतर देव करते थे। सुभौम की शक्ति के सामने सब डर गये। यह देखकर इन्द्रराम ने सुभौम के साथ युद्ध करने का आदेश दिया और अपना हाथी सुभौम को मारने के लिये आगे बढ़ाया। उसी समय सुभौम को चक्ररत्न प्रकट हो गया और सुभौम ने इन्द्रराम का वध कर दिया। सुभौम को चौदह रत्न और नव निधियाँ प्रगट हो गईं। वह चक्रवर्ती बन गया और दिव्य भोगों के साथ जीवन व्यतीत करने लगा। सुभौम आठवाँ चक्रवर्ती था। उसकी साठ हजार वर्ष की आयु थी, अट्ठाईस धनुष ऊँचा शरीर था, अनेक शुभ लक्षणों का धारी था।

महाराज सुभौम का एक अमृत नाम का रसोईया था। उसने भोजन में एक दिन बहुत प्रेम से रसायना नाम की कढ़ी परोसी, सुभौम को कढ़ी नाम सुनकर क्रोध आ गया। उसने रसोईये को इतना भयंकर दण्ड दिया कि वह मर गया। मरते समय क्रोध में उसने निदान किया कि मैं सुभौम को अवश्य मारूँगा। थोड़े पुण्य के कारण वह ज्योतिषी देव बन गया। उसे पूर्व बैर के कारण राजा सुभौम को मारने के लिये वह एक व्यापारी का वेष बनाकर आया और राजा को मीठे-मीठे फल देकर राजा की सेवा करने लगा।

एक दिन वह राजा से बोला कि महाराज! अब मीठे फल समाप्त हो गये। तो राजा सुभौम बोला - तो फिर जाकर वे फल लेकर आ जाओ। इसके उत्तर में व्यापारी बोला - वे फल अब नहीं लाये जा सकते। वे फल मैंने वन की देवी की आराधना कर के प्राप्त किये थे। यदि आपको वे फल चाहिये तो आप स्वयं मेरे साथ चलकर वे फल प्राप्त कर सकते हैं। सुभौम ने उन फलों के लोभ में उसकी मायाचारी को नहीं पहचान पाया और उस व्यापारी के साथ जाने के लिये तैयार हो गया। मंत्रियों ने राजा को बहुत समझाया परन्तु वह नहीं माना। जब होनहार खोटी हो तो अच्छे वचन भी कड़वे लगने लगते हैं। उसी समय जो यक्ष उसकी सेवा करते थे वे सब चले गये और चक्र आदि रत्न भी चले गये। वहाँ वे देव जो व्यापारी के वेष में था वह राजा को जहाज के द्वारा गहरे समुद्र में ले गया और वहाँ सुभौम को बुरे वचन कहे और छल से णमोकार मंत्र का अपमान करवा दिया और भयंकर पीड़ा देकर मार डाला। सुभौम अपने जीवन के अन्तिम समय बुरे परिणामों से मरा और मरकर सातवें नरक में उत्पन्न हुआ।

सार यह है कि जब बुरा समय आता है कि धन, शक्ति, साम्राज्य कुछ काम नहीं आती। इसलिये हर कार्य बहुत सोच विचार कर करना चाहिये।

भारतीय संस्कृति और श्रमण परम्परा

श्रमण संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। वैदिक भारतीय साहित्य में भी अनेक स्थानों पर इसके प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

ऋग्वेद (10/135/2) में लिखा है - मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसने मलाः।

यहाँ वातरशना मुनियों को मलधारी सूचित किया है। वातरशना का अर्थ वायु जिनकी मेखला है अथवा दिशायें जिनका वस्त्र हैं अर्थात् दिगम्बर।

ऋग्वेद के दशम मण्डल के 135वें सूक्त के कर्ता सात वातरशना मुनि थे। यथा - जूनि-वात जून-विप्रजूनि-वृषाणक-करिक्रत-एतशः-ऋष्यशृङ्ग-एते वातरशना मुनयः।।3।।

तैत्तिरीय आरण्यक तथा श्रीमद् भागवत् में वातरशना शब्द के साथ श्रमण शब्द का उल्लेख होने से यह बात और स्पष्ट हो जाती है कि वातरशना मुनि श्रमण ही थे।

श्रीमद् भागवत में वातरशना श्रमणों को आत्म विद्या विशारद, ऋषि, शान्त, सन्यासी और अमल कहकर उर्ध्वगमन द्वारा उनके ब्रह्मलोक में जाने की बात कही है।

श्रमणा वातरशना आत्मविद्या विशारदाः

(श्रीमद् भागवत 12-2-20)

वातरशना य ऋषयः श्रमणा उर्ध्वमन्थितः।
ब्रह्माख्यं धाम ते यान्ति शांता सन्यासिनाऽमलाः।।

(श्रीमद् भागवत 11-6-47)

एक स्थान पर ऋग्वेद में स्पष्ट रूप से श्रमण शब्द का प्रयोग है -

तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अगृथिता अमृत्यवः ।
ऋग्वेद (10/94/11)

वृहदारण्यक में कहा है - जब श्रमण और अश्रमण, तापस और

अतापस, पुण्य और पाप दोनों से रहित होता है तभी वह दुःखों का अभाव कर पाता है।

श्रमणोऽश्रमणस्तापसोऽपसो नन्वागतं पुण्येतानन्वागतपापेन तीर्णो हि तदा सर्वान् शोकान् हृदयस्य भवति। (वृ.आ. 4-3-22)

बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण की टीका में कहा गया है कि

श्रमणाः दिगम्बराः श्रमणा वातवसना इति निघण्टुः।

रामायण शबरी प्रकरण में भी समाधिभावना व्यक्त की गई है।

इस तरह पदमपुराण, विष्णुपुराण और शिवपुराण मतें दिगम्बर, मयूर पिछी धारी श्रमणों का उल्लेख है।

योगी दिगम्बरो मुण्डो बर्हिपिच्छधरो द्विजः। पदमपुराण 13/33

ततो दिगम्बरो मुण्डो बर्हिपिच्दधरो द्विजः । विष्णुपुराण 3/18

मयूरचन्द्रिकापुंजपिच्छिकां धारयन् करे । शिवपुराण 10/80/80

स्कन्दपुराण (59-35-36-37) में भी श्रमण को क्षपणक कहकर महाव्रतों का उल्लेख किया गया।

इस तरह अनेक हिन्दू शास्त्रों में श्रमणत्व का उल्लेख मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि हमारी संस्कृति अति प्राचीन है। इसी अनेक हिन्दू शास्त्रों में भगवान ऋषभदेव के बारे में अनेक प्रमाण मिलते हैं।

आपका साथ हमारा प्रयास - हो जिनधर्म का शंखनाद

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर

आपकी यह संस्था विगत लगभग 16 वर्षों से बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने का प्रयास कर रही है। इस क्रम में तत्वप्रचार की नवीनतम विधा का प्रयोग करते हुये जिनधर्म की कविताओं, कहानियों, गीतों के वीडियो का निर्माण किया गया। साथ ही रोचक धार्मिक गेम, कविताओं-कहानियों की चित्र सहित पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। बाल वर्ग में निरन्तर धर्म की जानकानियाँ प्रवाहित करने हेतु 2006 से चहकती चेतना पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका को पाठकों एवं अनेक विद्वानों का भरपूर प्यार और विश्वास प्राप्त हुआ है ।

संस्था के पास जिनधर्म के प्रचार की अनेक योजनायें हैं आपका सहयोग मिलता रहेगा तो हम आगे भी समाज के लिये यह कार्य निरन्तर करते रहेंगे। आशा है आपका सहयोग और विश्वास प्राप्त होगा। आप निम्न प्रकार से हमारा सहयोग कर सकते हैं ।

शिरोमणि परम संरक्षक - 1 लाख रुपये । परम संरक्षक - 51 हजार रुपये ।
संरक्षक - 31 हजार रुपये । परम सहायक - 21 हजार रुपये । सहायक - 11 हजार रुपये ।
सहायक सदस्य - 5 हजार रुपये । सदस्य - 1000/- हजार रुपये ।

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101026079, IFSC - PUNB0193700

तीर्थयात्रा ऐसी हो...

फतेहपुर गुजरात के निवासी पण्डित बाबूभाई मेहता देश के बहुत बड़े विद्वान थे। वे बाह्य चारित्र भी बहुत उज्ज्वल था। भगवान महावीर के निर्वाण उत्सव पर उनके नेतृत्व में धर्मचक्र का संचालन होने वाला था। इसमें 650 भाई-बहिन भाग लेने वाले थे। उन्होंने सभी तीर्थयात्रियों को निर्देश दिया कि इस यात्रा में चलने वाले सभी यात्रियों को इन नियमों का पालन करना बहुत जरूरी है।

- कोई भी व्यक्ति रात्रि भोजन नहीं कर सकेगा और न होटल में भोजन करेगा।
- कोई भी व्यक्ति बिना छना जल नहाने, कपड़े धोने में भी प्रयोग नहीं करेगा।
- आलू, प्याज, गाजर आदि जमीकन्द और द्विदल नहीं खा सकेगा।
- पूजन, भक्ति, स्वाध्याय और शिक्षण कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहना होगा।
- कोई भी व्यक्ति बीड़ी, सिगरेट, तम्बाखू आदि नशे की वस्तुयें प्रयोग नहीं कर सकेगा।
- जितने दिनों तक यात्रा होगी उतने दिनों संयम और ब्रह्मचर्य से रहना होगा।

इन नियमों का उल्लंघन करने वाले को संघ से तुरन्त बाहर निकाल दिया जायेगा।

इस धर्मचक्र यात्रा में बसों के अतिरिक्त कुछ श्रेष्ठी अपनी व्यक्तिगत कारें लेकर शामिल हुये थे परन्तु उन्हें भी इन नियमों को पालन करना आवश्यक था। पूरी यात्रा बहुत भक्तिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। जिनधर्म की बहुत प्रभावना हुई। नगर-नगर में जोरदार स्वागत हुआ। बाबूभाई के कुशल नेतृत्व क्षमता और आदर्श आचरण ने जिनधर्म का मान बढ़ाया।

बेईमानी

एक साधर्मी अपने परिवार के साथ सम्मेदशिखर की यात्रा पर जा रहे थे। उन्होंने अपने दोनों बच्चों का टिकिट नहीं लिया था। जब टिकिट चेक करने आया तो कह दिया कि दोनों बच्चे अभी पाँच वर्ष से कम उम्र के हैं। कुछ घंटों के बाद दूसरा टिकिट चेक करने आया तो फिर उनसे झूठ कह दिया। तभी उनका बड़ा बेटा बोला - पापा आप भूल गये क्या ? मैं तो 6 साल का हो गया हूँ।

यह सुनकर टीसी हंसते हुये बोला -भाईसाहब! तीर्थयात्रा करने जा रहे थे तो बेईमानी घर पर छोड़कर आते यदि आप तीर्थयात्रा में भी बेईमानी करेंगे तो आपकी तीर्थ यात्रा करना व्यर्थ है ।

एक क्षण और ......

सीता का भाई भामण्डल ने एक दिन वज्रांक मुनिराज को आहार दिया और उसके बाद अपने महल की छत पर बैठकर आकाश की ओर देख रहा था। आकाश में बादलों का आकार कभी बन रहा था तो कभी बिगड़ रहा था। कभी बादल महल के आकार के बन जाते, कभी लगता बादलों का घोड़ा बन गया तो कभी लगता आकाश में विशाल काला हाथी जा रहा है।

भामण्डल सोचने लगा - इसी तरह मेरा यौवन और वैभव नष्ट हो जायेंगे। जब तक यौवन अवस्था है तब तक जी भरकर भोग लेना चाहिये नहीं तो बुढ़ापा आने पर ये इन्द्रियाँ कमजोर पड़ जायेंगी और उस समय सारा मजा बिगड़ जायेगा। यह जवानी तो भोगों के लिये ही तो है जब वृद्धावस्था आयेगी तब धर्म कर लेंगे। अभी तो सारी जिन्दगी पड़ी है धर्म करने के लिये।

जिन बादलों को देखकर तीर्थंकर, राजा आदि अनेक महापुरुषों को वैराग्य हो जाता था और वे मुनि दीक्षा लेकर आत्मकल्याण कर लेते थे उन्हीं बादलों का निमित्त मिलने पर भामण्डल को भोग भोगने की भावना हुई। इससे सिद्ध होता है कि निमित्त से कुछ काम नहीं होता बल्कि उपादान की योग्यता से कार्य होता है।

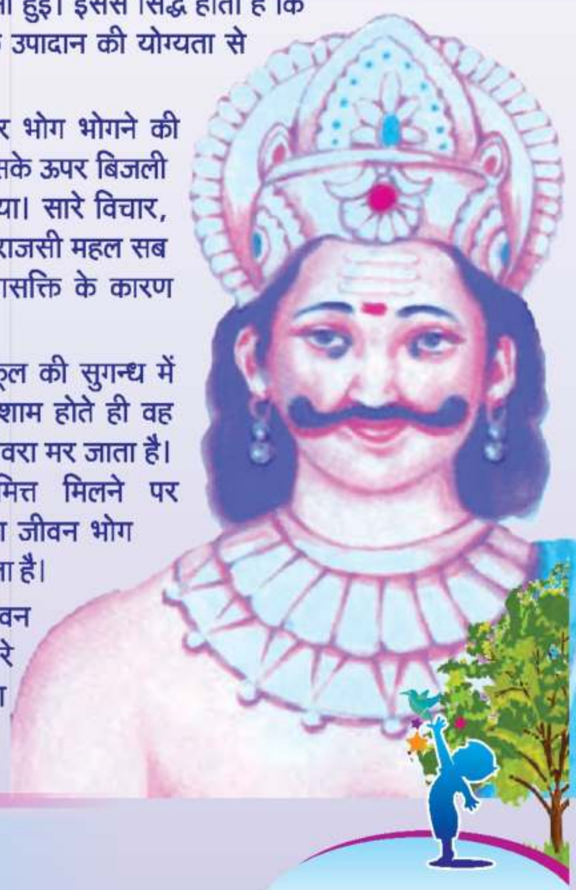

भामण्डल बादलों को देखकर भोग भोगने की भावना कर ही रहा था कि अचानक उसके ऊपर बिजली गिरी और तत्काल उसका मरण हो गया। सारे विचार, सारे भोग साधन, धन, स्त्री ,परिवार, राजसी महल सब वहीं पड़ा रह गया किन्तु भोगों में आसक्ति के कारण भामण्डल का जीव दुर्गति में पहुँच गया।

जैसे एक भंवरा कमल के फूल की सुगन्ध में मस्त होकर उसमें रम जाता है और शाम होते ही वह कमल का फूल बन्द हो जाता है और भंवरा मर जाता है। ऐसे ही संसारी प्राणी उत्तम निमित्त मिलने पर आत्मकल्याण का प्रयास न करके पूरा जीवन भोग भोगने और धन जोड़ने में बरबाद कर देता है।

हम विचार करें कि हमारे जीवन की दिशा क्या होना चाहिये ? यदि हमारे जीवन का दिशा का लक्ष्य आत्मकल्याण है तो निश्चित ही हमारा कल्याण होगा।

मोबाइल की जिद के कारण एक और बच्चे ने की आत्महत्या

पिता ने मोबाइल फोन नहीं दिलाया तो 11 साल के बच्चे ने लगाई फांसी

मोबाइल हमारी मानसिक अशांति का कारण तो बन ही रहा है परन्तु अब यह मोबाईल परिवार को ऐसे जख्म दे रहा है जिसकी भरपाई करना असंभव है।

भोपाल के अशोका गार्डन में रहने वाले 12 वर्षीय मोजम्मिल ने स्मार्ट फोन न मिलने पर आत्महत्या कर ली।उसके पिता ने बताया कि बेटा 4 दिन से मंहगे मोबाईल की जिद कर रहा था। मैंने उसे 1500 रु. दिये और समझाया कि मोबाइल मत खरीदो, इससे अपनी पसंद के कपड़े खरीद लेना, पर वह मोबाइल की जिद करता रहा। मेरे पास उस समय इतने रुपये नहीं थे। इसके बाद मैं चला गया, बाद उसने किचन में जाकर फांसी लगा ली। वह छोटा होने के कारण बहुत जिद्दी था और अपनी हर बात मनवा लेता था। कई बार उसकी जिद पूरी नहीं होती थी तो वह हाथ पर ब्लेड से कट मार लेता था।

हरियाणा के रेवाड़ी में एक 16 साल की लड़की ने मोबाइल की इच्छा पूरी न होने पर आत्महत्या कर ली। इसी तरह उत्तरप्रदेश के कुशीनगर के 12 वर्ष के शिकेन्द्र ने अपने पिता से मोबाइल न मिलने पर झरही नदी में कूदकर जान दे दी।

ये वे घटनायें हैं जो वर्तमान परिवेश का व्यक्त कर रहीं हैं। माता-पिता का अपने बच्चों से जरुरत से अधिक प्यार, उनकी हर इच्छा पूरी करना और आपसी संवाद में दूरी आदि अनेक कारणों से बच्चे कुंठित या जिद्दी होते जा रहे हैं।

हर माता-पिता को प्यार और अनुशासन में निश्चित मर्यादा बनाना जरूरी है। कहीं ऐसा न हो कि सख्त अनुशासन या ज्यादा लाड़ प्यार हमें पछताने पर मौका दे।

चार्जिंग में लगे मोबाईल फोन पर बात करने का परिणाम

हमारे महापुरुष

महामंत्री साह नानू

आमेर जयपुर के राजा भगवानदास थे। सन् 1562 में राजा भगवानदास की बहन का विवाह सम्राट अकबर से हुआ तब भगवानदास के पुत्र मानसिंह मात्र 12 वर्ष के थे। तभी से मानसिंह सम्राट अकबर के विश्वासपात्र बन गये। अकबर ने सन् 1590 में जब उन्हें बंगाल-बिहार-उड़ीसा का प्रान्तीय प्रमुख नियुक्त किया तब उन्होंने उस विशाल प्रदेश में समस्त विद्रोहियों को पराजित कर मुगल सत्ता स्थापित कर दी और वहाँ अच्छी तरह शासन करना प्रारम्भ कर दिया।

मानसिंह के प्रमुख महामंत्री साह नानू जैन थे। साह नानू मानसिंह के मुख्य विश्वासपात्र थे और अपने पिता के समान जिनेन्द्र भक्त, दानवीर, जिनधर्म के प्रचारक, वैभव सम्पन्न, अतिविनयवान और अत्यंत रूपवान थे। इन्होंने शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर पर बीस तीर्थंकरों के निर्वाण स्थल पर बीस टोंक बनवाईं और सम्मेदशिखर की अनेक बार संघ सहित यात्रा की। चम्पापुर में भी जिनमंदिर का निर्माण करवाया, अकबरपुर का आदिनाथ जिनालय साह नानू के द्वारा ही बनवाया गया। सन् 1602 में साह नानू की प्रार्थना पर मुनि ज्ञानकीर्ति अकबरपुर पधारे और इसी जिनमंदिर में ठहरे थे और साह नानू की प्रेरणा पर उन्होंने यशोधर चरित्र नामक संस्कृत काव्य की रचना की।

सन् 1607 में साह नानू अपने स्वदेश आमेर वापस आ गये और मौजमाबाद में विशाल जिनमंदिर बनवाया और अनेक जिनबिम्बों की भव्य प्रतिष्ठा करवाई जिसमें हजारों श्रावक सम्मिलित हुये। बाद में इन्हीं के वंश के साह ठाकुर और उनके पुत्र तेजपाल ने जिनधर्म प्रचार के अनेक कार्य किये।

इस तरह आप विचार करें कि हमारे पूर्वज जिनके हम नाम भी नहीं जानते उन्होंने इस पवित्र जिनशासन के प्रति अनेक महान कार्य किये। इन जैसे महापुरुषों के पवित्र कार्य के कारण हमें यह जिनशासन सुरक्षित मिला है। हमारा भी कर्तव्य भी है कि विरासत में प्राप्त महान जैनधर्म की सुरक्षा, प्रचार और अगली पीढ़ी में जिनधर्म के संस्कार दें।

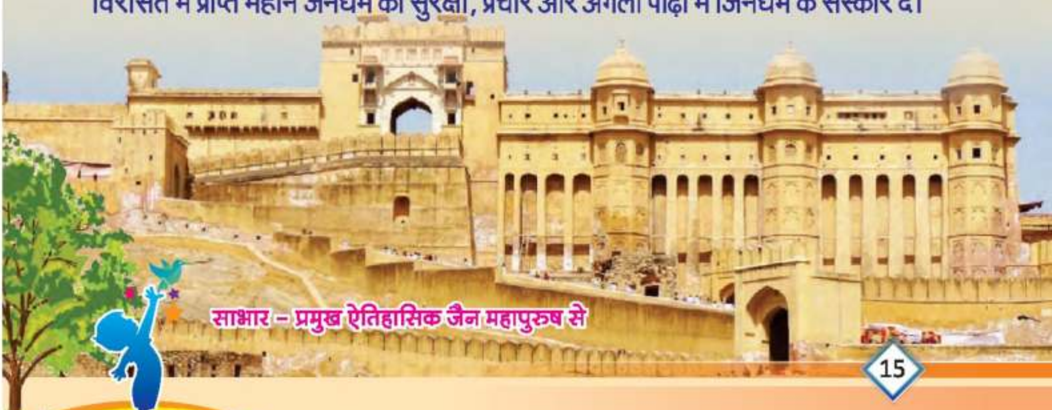

साभार – प्रमुख ऐतिहासिक जैन महापुरुष से

भाग्य

एक सेठ थे, उनके पास बहुत धन-संपत्ति थी। सेठजी ने अपनी इकलौती बेटी की शादी एक सम्पन्न परिवार में योग्य लड़के से की परन्तु बेटी के भाग्य में धन का सुख न होने से उसका पति को व्यापार में बहुत घाटा हो गया, जिससे सारा धन समाप्त हो गया और वह कर्ज में भी आ गया। पति बहुत स्वाभिमानी था उसे अपने ससुर से धन मांगना या धन लेना बिल्कुल पसंद नहीं था।

सेठजी तो नियमित स्वाध्याय करते थे। वे पुण्य-पाप के उदय के स्वरूप को अच्छी तरह समझते थे और अपनी बेटी को भी साहस रखने को कहते थे। परन्तु सेठ की पत्नी को स्वाध्याय में रुचि नहीं थी। वह अपने पति से बोली - आप हमेशा अपनी बेटी की सहायता करने की बजाय उसे प्रवचन सुनाते रहते हो। कैसे पिता हैं आप...? अपनी बेटी के दुःख में सहयोग भी नहीं कर सकते ?

सेठजी बोले - जब उसका भाग्य उदय होगा तब अपने आप उसे सबका सहयोग भी मिलेगा और व्यापार भी अच्छा हो जायेगा। परन्तु सेठानी को सेठजी की यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई।

एक दिन सेठजी कहीं बाहर गये थे और उसी दिन दामाद घर पर आ गये। सेठानी ने उनका बहुत आदर-सत्कार किया और प्रेम से भोजन कराया। उसने सोचा - क्यों न मोतीचूर के लड्डुओं में सोने के सिक्के रखकर दामादजी को दे दूँ... जिससे इन्हें अपने आप सहायता हो जायेगी। उसने मोतीचूर के लड्डू बनाये और उसके अन्दर सोने के सिक्के दबा दिये और अपने दामाद को पाँच किलो शुद्ध घी और लड्डू देकर विदा कर दिया। दामाद लड्डू लेकर चला। उसने सोचा इतना वजन लेकर घर क्यों जायें ? वैसे भी घर पर लड्डू कौन खायेगा ? उसने एक मिठाई की दुकान पर जाकर वे लड्डू बेच दिये और रुपये लेकर अपने घर चला गया।

उधर सेठजी बाहर से लौट रहे थे तो उन्होंने सोचा कि क्यों न मिठाई की दुकान से मोतीचूर के लड्डू ले चलूँ... और सेठजी उसी मिठाई की दुकान पर जाकर बोले - भाई! 2 किलो मोतीचूर के लड्डू देना । मिठाईवाले ने दामाद के लड्डू को पैकेट उठाकर सेठजी को दे दिया। घर पहुँचकर उसने सेठानी को लड्डू दिये तो सेठानी को लड्डू परिचित से लगे। उसने तुरन्त लड्डू फोड़कर देखे तो उसमें

सोने के सिक्के देखकर माथा पीट लिया। सेठानी ने सोने के सिक्के वाली बात सेठ को बताई तो सेठ ने लड्डू लाने पूरी घटना सुनाई। तब सेठजी बोले -मैंने पहले ही कहा था कि पुण्य के बिना कोई किसी को सहयोग नहीं कर सकता। देखा!
ये सोने के सिक्के न तो दामाद के भाग्य में थे, न ही मिठाई वाले के। इसे कहते हैं भाग्य।
सेठानी को अब पुण्य - पाप की परिभाषा समझ में आने लगी थी।

पवित्र कार्य के लिये साधन भी पवित्र

खादी का प्रचार करने के लिये महात्मा गांधी ने 1915 में एक महिला सभा की स्थापना की। एक दानी महिला के आर्थिक सहयोग से बहुत सारे चरखे मंगाकर महिलाओं को वितरित किये गये और उनसे धागा तैयार कर उसका प्रचार किया जाने लगा। काम करने वाली महिलाओं को चरखा चलाने का अनुभव न होने से अधिकांश चरखे टूट गये। नये चरखे के लिये धन की कमी थी। एक भाई ने महात्मा गांधी को सलाह दी कि सिनेमा का एक शो दिखाकर धन एकत्रित किया जा सकता है। गांधीजी ने कहा - जिस सिनेमा को देखकर लोग चरित्र भ्रष्ट हो रहे हैं ऐसे खोटे साधनों से पवित्र कार्य नहीं करना चाहिये। पवित्र कार्य पवित्र साधनों से ही सफल होते हैं।

वीर शासन जयन्ती

(28 जुलाई 2018)

तीर्थंकर महावीर प्रभु को केवलज्ञान हुआ सुखकार।
इन्द्रगणों ने समवशरण रच, कार्य किया शुभ मंगलकार।
छियासठ दिन तक प्रभु वाणी का मिला नहीं भव्यों को लाभ।
मानस्तंभ में जिनमुद्रा लख, चकित हुये गौतम ऋषिराज।
मान गला गौतम ब्राह्मण का, दीक्षा ली मुनिधर्म महान।
गणधर हो गये अल्प समय में, खिरी वीर ध्वनि जग कल्याण।
प्रथम देशना मिली वीर की, मंगल दिवस मनाते हैं।
शासन नायक महावीर को सादर शीश झुकाते हैं॥

वात्सल्य पर्व रक्षाबंधन

मुनि अकंपन स्वामी आदि सात शतक आये मुनिराज।
उपसर्ग किया बलि राजा ने तब, रक्षा की विष्णु मुनिराज।
भाई – बहन का पर्व नहीं यह, नहीं रागियों का त्यौहार।
नहीं राग से दूषित करना, पर्व धर्म रक्षा का आज।
यह वात्सल्य पर्व कहलाता, मुनिराजों का यह त्यौहार।
साधर्मी की रक्षा करने, भविजन रहें सदा तैयार।

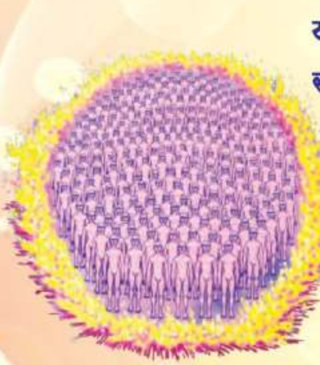

– विराग शास्त्री,
जबलपुर

रक्षाबन्धन पर्व पर विशेष

भाई का पत्र बहन के नाम

मेरी प्यारी बहना,

सभी लोग रक्षा बन्धन के पर्व को भाई-बहन के प्यार के नाम पर मनाते हैं पर तुम तो जानती हो कि जैनधर्म की पौराणिक कथा के अनुसार इस दिन विष्णु कुमार मुनिराज ने वात्सल्य के कारण अपना पद छोड़कर अकम्पनाचार्य आदि 700 दिगम्बर मुनिराजों का उपसर्ग दूर किया था और प्रायश्चित लेकर पुनः दीक्षा धारण की थी।

तुम मुझे सदा राखी बांधती रही हो इसलिये तुमसे कह रहा हूँ। वस्तुसिद्धान्त के अनुसार इस लोक में सभी द्रव्य और उनके अनंत गुण स्वयं अपनी रक्षा करते हैं। कोई किसी की रक्षा करने में समर्थ नहीं है। हम सब तो आपस में वात्सल्यवश एक दूसरे की रक्षा करने का वचन देते हैं। इसी अनुसार मैं तुम्हारी रक्षा करने का वचन देता हूँ तुम मुझे इन बातों का वचन दो तो क्योंकि इसके बिना तुम्हारी रक्षा करने में कोई समर्थ नहीं है।

बिना संस्कार के जीवन पशुओं के समान है इसलिये तुम सदा जिनालय और जिनवाणी की शरण में रहना, पाठशाला नियमित जाना। अब तुम बड़ी हो रही हो, पर ये मत समझना कि बहुत बड़ी हो गई हो, पाठशाला बच्चे जाते हैं मैं क्यों जाऊँ..? बिना सत्समागम के भौतिकता की चकाचौंध से बचना असंभव है। इसलिये तुम वचन दो कि तुम सदा धर्मात्माओं और जिनशास्त्रों का समागम करोगी।

तुम मेरे लिये बहुमूल्य हो, तुम महान जैन कुल में जन्मी हो। सदा शालीन वस्त्र पहनना। तुम्हारे वस्त्र और व्यवहार देखकर लोगों को अपने उत्तम परिवार और जिनशासन की महिमा आना चाहिये। सदा हिंसात्मक सौन्दर्य प्रसाधनों से दूर रहना और अपने वस्त्र और श्रृंगार से दूसरों को रिझाने का परिणाम तो पाप भाव है, ऐसे निकृष्ट भाव से खोटी गति मिलती है और मेरी प्यारी बहन निकृष्ट गति में जाये - ये मैं कभी नहीं चाहूँगा। जैनशासन भेदज्ञान से स्त्रीपर्याय छेदने के लिये मिला है।

बड़े होने पर तुम कॉलेज भी जाओगी। ध्यान रखना, हर व्यक्ति में कुछ अच्छाईयाँ और कुछ बुराईयाँ अवश्य होती हैं। किसी की अच्छाईयाँ देखकर उसके प्रेम में मत पड़ जाना। शील की मर्यादा रखकर सबसे मर्यादित व्यवहार करना। अपने मम्मी-पापा का विश्वास मत तोड़ना। तुम्हारी एक भूल पूरे परिवार को और जिनशासन को कलंकित कर देगी। अनन्तभवों के बाद जैन कुल मिला है

इसलिये अन्यमत में विवाह करने का विचार भी मत करना। अन्यमत में विवाह गृहीत मिथ्यात्व के पाप की परम्परा बढ़ायेगा और अनन्तकाल तक तुम्हें जिनधर्म से दूर कर देगा। समय आने पर योग्य वर से तुम्हारा विवाह होगा।

मेरी बहना! आज वचन दो कि अध्ययन के समय शील की मर्यादा में रहोगी। माता-पिता जिस योग्य वर को तुम्हारे लिये निश्चित करें उसी से विवाह करोगी अन्यथा अपने भाई और परिवार का स्नेह सदा के लिये खो दोगी क्योंकि तुम्हारे पाप के कार्य की अनुमोदना करके मैं दुर्गति का पात्र नहीं बनना चाहता। भोजन में अभक्ष्य भक्षण और रात्रि भोजन कर पाप कार्य में मत लगना। तुम्हारे परिवार का भोजन देखकर आने वाले मेहमान को भी प्रेरणा मिले - ऐसा प्रयास करना।

अनकूलता और प्रतिकूलतायें संसार का नियम है। सुख के संयोगों में प्रमादी मत होना, यहाँ वहाँ घूमकर अपना समय नष्ट मत करना और समस्यायें आने पर धैर्य मत खोना। हर परिस्थिति में वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु की आराधना करना।

मेरी बहन ! ये संकल्प करो कि चाहे कितनी भी प्रतिकूलतायें या अनुकूलतायें आयें पर वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु के अलावा अन्य को नहीं पूजूँगी।

यदि तुम ये वचन स्वीकार करोगी तो तुम्हें मेरे द्वारा रक्षा की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। तुम स्वयं की ही नहीं बल्कि परिवार की रक्षा में भी निमित्त बनोगी। जिनवचनों का स्वाध्याय करना और यदि मैं कभी धर्म विरुद्ध कार्य करूँ तो पूरे अधिकार के साथ मुझे धर्म मार्ग में लगने की प्रेरणा देना।

इन वचनों के साथ तुम मुझे राखी बांधोगी तो ये रक्षाबन्धन पर्व सार्थक होगा। हम सब सांसारिक बन्धनों से छूट कर सदा के लिये मुक्त पद धारण करेंगे।

तुम्हारा बड़ा भाई - ज्ञाता सिंघई, सिवनी

ट्रेन का भोजन करने वाले और चाय पीने वाले सावधान

आप यदि ट्रेन में भोजन करते हैं या चाय आदि पीते हैं तो आप सावधान हो जाइये। रेल्वे द्वारा चलाये जांच अभियान में अधिकारियों को कई ट्रेनों में पेन्ट्रीकार में सड़े टमाटर, कीड़े वाली सब्जी, गन्दे बर्तन, कॉकरोच वाला पनीर मिला। जिस बाथरूम के पानी को मल साफ करने में उपयोग करते हैं कई ट्रेनों में उसी पानी की चाय बनाते हुये पेन्ट्रीकार के कर्मचारियों को पकड़ा गया। पकड़े जाने के बाद कोई कार्यवाही न होने से इनका यह कार्य चलता रहता है। कहीं ऐसा न हो कि ये भोजन आपके लिये एक दिन मुसीबत खड़ी कर दे...।

सच्चा आनन्द

एक भिखारी किसी किसान के घर भीख मांगने गया। किसान की स्त्री घर में थी उसने चने की रोटी बना रखी थी। किसान आया और उसने अपने बच्चों को मुख चूमा, स्त्री ने किसान के हाथ धुलवाये और वह रोटी खाने बैठ गया। स्त्री ने एक मुट्ठी चना भिखारी को दे दिया और भिखारी चना लेकर चल दिया।

रास्ते में वह सोचने लगा- हमारा भी कोई जीवन है दिन भर कुत्ते की तरह मांगते रहो, फिर स्वयं बनाकर खाओ। इस किसान को देखो - कितना सुन्दर घर है। पत्नी है, बच्चे हैं। स्वयं अपने खेत में अनाज पैदा करता है और बच्चों के साथ प्रेम से भोजन करता है, वास्तव में सुखी तो यह किसान है।

इधर भोजन करते-करते किसान अपनी पत्नी से कहने लगा कि अपना बैल बहुत बूढ़ा हो गया है। यदि कुछ रुपयों की व्यवस्था हो जाये तो एक नया बैल ले आऊँ। आज ही साधोराम महाजन के पास जाऊँगा और शायद वह कुछ रुपये ब्याज पर दे दे।

वह भोजन करके साधोराम के पास गया और समस्या बताकर बैल के लिये कुछ रुपये मांगे। बहुत देर तक विनती करने के बाद साधोराम ने 1 रुपया ब्याज दर से रुपये देना मंजूर किया और लोहे की तिजोरी से रुपये लाकर किसान को दे दिये। रुपये लेकर किसान सोचने लगा - हम भी कोई इंसान हैं। इतनी देर तक हाथ जोड़ने पर साधोराम ने मुश्किल से रुपये दिये। साधो कितना धनी है। वास्तव में सुखी तो साधोराम ही है।

इधर साधोराम की छोटी सी कपड़े की दुकान थी। वह सेठ पृथ्वीचन्द की बड़ी दुकान से कपड़ा लाकर बेचा करता था। दूसरे दिन साधोराम पृथ्वीचन्द की दुकान पर कपड़ा लेने गया। वहाँ पर उसने देखा कि सेठ को लगातार कोई न कोई आकर व्यापार में 1 लाख, कहीं 3 लाख, कहीं 5 लाख के फायदे का समाचार दे रहे थे। जब साधोराम वापस आ रहा था तो सोचने लगा कि एक दिन में लाखों का फायदा..। वास्तव में सेठ पृथ्वीचन्द कितना सुखी है। उधर पृथ्वीचन्द को

समाचार मिला कि कपड़े की फैक्टरी में आग लगने से 5 लाख का नुकसान हो गया तो वे बहुत चिन्ता में आ गये तभी एक सेवक ने याद दिलाया कि नगर के रायबहादुर सेठ के घर उसके पुत्र जन्मोत्सव पर भोजन के निमंत्रण पर जाना है। तो वह कार से रायबहादुर के घर गया तो वहाँ देखा कि रायबहादुर के घर पर सोने-चांदी की कुर्सियाँ पड़ी थीं, कलेक्टर, कमिश्नर, रायबहादुर से हाथ मिला रहे थे और बड़े-बड़े सेठ सामने खड़े थे। सेठ पृथ्वीचन्द को कौन पूछता बहुत देर बाद उसने रायबहादुर से हाथ मिलाया और अपने घर वापस आने लगा। रास्ते में सोचने लगा कि हम तो नाम के सेठ हैं, 5 लाख के घाटे में ही घबरा गये। रायबहादुर के ठाट-बाट के क्या कहना.... बच्चे के जन्मोत्सव पर 2 लाख खर्च कर दिये होंगे। वास्तव में सुखी तो ये हैं।

इधर कार्यक्रम समाप्त होने के बाद रायबहादुर को सिर में बहुत दर्द हो गया। तुरन्त डॉक्टर बुलाया गया। डॉक्टर ने उन्हें 1 माह तक बिस्तर पर आराम करने और काम न करने की सलाह दी। रायबहादुर चिन्ता में पड़ गये उन्हें अपने व्यापार की चिन्ता होने लगी। उन्होंने अपने कमरे टहलते हुये खिड़की से बाहर देखा तो वही भिखारी हाथ में डण्डा घुमाते हुये गाना गाते हुये देखा जिसकी चर्चा हम इस कथा के प्रारम्भ में ही कर चुके हैं। रायबहादुर भिखारी को देखकर सोचने लगे वास्तव में सुखी तो यही है इसे तो न फायदे की चिन्ता न घाटे की टेन्शन। इसे तो किसी को पार्टी भी नहीं देनी पड़ती।

इस कहानी को कहने का सार इतना ही है कि हम एक दूसरे को सुखी समझते हैं परन्तु सच्चा सुखी वही जिससे आन्तरिक शान्ति है और यह शान्ति जैन दर्शन के सिद्धान्तों को समझने और उसे आत्मसात् करने से ही आ सकती है।

सन्मान

गुरुजन का सन्मान है करना, मात-पिता से बहस न करना।
गुस्से से कोई न बात न कहना, सदा 'आप' कह बात है करना।।
जिद नहीं करना विनय से रहना, सदा ही उनका मानो कहना।
मात-पिता आधार हमारे, कभी न उनके मन को दुखाना।।
घर में कोई मेहमान जब आये, टीवी पिक्चर नहीं देखना।
जय जिनेन्द्र कह स्वागत करना, अच्छी प्यारी बातें करना।।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

सेंधा नमक

नमक हमारे भोजन की मुख्य वस्तुओं में शामिल है। नमक एक ऐसा पदार्थ है जिसके बिना भोजन बेस्वाद हो जाता है। पर हमारे भोजन में प्रयोग किया जाने वाला नमक खाने योग्य है या नहीं इसका विचार अवश्य करना चाहिये।

नमक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं - एक समुद्री नमक और दूसरा सेंधा समुद्री नमक अप्राकृतिक तरीके से पानी को सुखाकर बनाया जाता है जबकि सेंधा नमक प्राकृतिक चट्टानों से निर्मित होता है। सन् 1930 के पहले तक सेंधा नमक ही खाया जाता है, समुद्री नमक नमक का नाम भी नहीं था। भारत के अंग्रेजी प्रशासन द्वारा भारत की भोली जनता को लूटने के लिये उनमें भ्रम फैलाया गया कि आयोडिन युक्त नमक खाओ। आयोडिन की कमी के कारण लोग बीमार हो रहे हैं। ये स्वास्थ्य के लिये बहुत अच्छा है। यह बात बहुत ही योजनापूर्वक पूरे देश में फैलाई गई। नमक में तो प्राकृतिक रूप से आयोडिन होता ही है पर धन कमाने के लिये दुष्प्रचार कर और अलग से आयोडिन मिलाया जाने लगा। जो नमक पहले 0.50 पैसे प्रति किलो बिकता था वह आज 20 रुपये किलो बिक रहा है। अब टीवी पर विज्ञापन आता है कि आयोडिन वाला नमक खाईये। ये नमक अन्नपूर्णा, कैप्टनकुक, टाटा आदि के नाम से बिक रहा है।

दुनिया के अमेरिका, जर्मनी, डेनमार्क, फ्रांस आदि 56 देशों ने अतिरिक्त आयोडिन वाले नमक पर 40 साल पहले ही बैन लगा दिया था। डेनमार्क के सरकार ने कहा कि 1940 से 1956 तक सरकार ने आयोडिन युक्त नमक के विक्रय की छूट दी जिससे अधिकांश लोग नपुसंक हो गये। तब वैज्ञानिकों ने कहा कि आयोडिन युक्त नमक तुरन्त बन्द कराइये तब आयोडिन वाले नमक पर बैन लगा दिया गया और हमारे देश के नासमझ नेताओं ने कानून बनाया कि भारत में आयोडिन के बिना वाला नमक भारत में नहीं बेच सकते। कुछ वर्ष पहले ही किसी नागरिक की याचिका पर यह कानून रद्द कर दिया गया।

समुद्री नमक के नुकसान -

आयोडिन युक्त नमक के नाम से बिकने वाले नमक में अतिरिक्त आयोडिन मिलाया जा रहा है और यह हाई ब्लड प्रेशर, लकवा, डायबिटीज जैसी गम्भीर बीमारियो का कारण बन रहा है।

रिफाइण्ड नमक में 98 प्रतिशत सोडियम क्लोराइड होती है। शरीर इसे स्वीकार नहीं करता। आयोडिन को बनाये रखने के लिये इसमें Tricalcium, Phosphate, Magnesium Carbonate, Sodium Alumino Silicate जैसे रसायन मिलाये जाते हैं। यह केमिकल सीमेण्ट बनाने में भी उपयोग किये जाते हैं। विज्ञान के

अनुसार यह केमिकल शरीर में रक्त कोशिकाओं को कड़ा बनाते हैं जिससे ऑक्सीजन में रुकावट और ब्लॉक्स बनने की संभावना होती है। इससे जोड़ों का दर्द, गङ्ग्यिावात, प्रोस्टेट सम्बन्धी आदि समस्यायें होती हैं। 1 ग्राम नमक अपने से 23 गुना ज्यादा पानी खींचता है। यह पानी कोशिकाओं के पानी को कम करता है। इस कारण हमें प्यास अधिक लगती है।

इसके प्रयोग से रक्त अम्लता एसिडिक भी बढ़ती है जिससे 48 तरह के रोग आते हैं।

यह नमक पानी में पूरी तरह नहीं घुलता बल्कि हीरे की तरह चमकता रहता है। इसी तरह यह शरीर में अन्दर जाकर भी नहीं घुलता और किडनी से भी नहीं निकलने के कारण पथरी का कारण बनता है।

समुद्री नमक में अनेक तरह की हिंसा होने से यह अभक्ष्य है।

दूसरी ओर सेंधा **(Rock Solt)** से बनता है। भारतीय महाद्वीप में इस खनिज पत्थर को सेंधा नमक, लाहौरी नमक या सेन्धव नमक कहा जाता है। जिसका मतलब है सिंध या सिन्धु के इलाके से आया हुआ। वहाँ नमक के विशाल पहाड़ हैं।

सेंधा नमक खाने से फायदे -

- पाँच हजार साल पुरानी आयुर्वेद पद्धति में भोजन में सदैव सेंधा नमक के प्रयोग की सलाह दी गई है।
- यह हृदय के लिये उत्तम और पाचन में सहायक होता है। यह त्रिदोष नाशक, ठंडी तासीर वाला होता है।
- इससे ब्लडप्रेशर और गंभीर बीमारियों पर नियंत्रण रहता है क्योंकि यह अम्लीय नहीं बल्कि क्षारीय होता है। क्षारीय पदार्थ जब रक्त मे मिलता है तो वह न्यूटल हो जाता है और रक्त अम्लता समाप्त हो जाने से शरीर के अनेक रोग उत्पन्न ही नहीं होते।
- यह नमक पूरी तरह घुलनशील है जिससे शरीर में तकलीफ नहीं होती। यह नमक 97 पोषक तत्वों की कमी पूरी करता है।
- शुद्ध और प्राकृतिक होने के कारण यह व्रत आदि में लिया जा सकता है।
- यह वात पित्त कफ से दूर रखता है।

इसलिये शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक सेंधा नमक खाईये और अनेक प्रकार के रोगों से अपने आप बच जाईये।

जीभ का टेस्ट, पेट में डाले वेस्ट, रोग बनें गेस्ट, डॉक्टर बतायें रेस्ट, मनी होती वेस्ट, इसलिये शुद्ध पदार्थ हैं परफेक्ट यही हैं सबसे बेस्ट।।

ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

देवलाली- के सुरम्य वातावरण के मध्य स्थित श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट के मनोरम परिसर में 19वाँ बाल संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। दिनांक 29 अप्रेल से 6 मई तक सम्पन्न इस शिविर में मुम्बई और नासिक के आसपास के नगरों के लगभग 300 बच्चों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संयोजन श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया ने किया।

सीडी वितरण - श्री शांतिभाई रिखबदास जैन एवं श्री अक्षत नीतेश जैन मुम्बई द्वारा सभी शिविरार्थियों का नवीन वीडियो सीडी वितरित की गई।

गुलबर्गा कर्ना. - में प्रथम बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री 1008 महावीर सांस्कृतिक लोक कल्याण मण्डल, गुलबर्गा द्वारा स्थानीय श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर में दिनांक 8 अप्रेल से 12 अप्रेल तक आयोजित हुआ। दैनिक कार्यक्रमों प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक और दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक बाल और प्रौढ़ कक्षायें और शाम 7.30 से 9.30 तक जिनेन्द्र भक्ति और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री विराग शास्त्री और श्री हर्षित शास्त्री, ग्वालियर का समागम प्राप्त हुआ।

बोरीवली मुम्बई - यहाँ संचालित वीतराग विज्ञान पाठशाला का 10वाँ स्थापना दिवस का भव्य आयोजनपूर्वक मनाया गया। स्थानीय श्री प्रबोधन ठाकरे हॉल में दिनांक 15 अप्रेल को आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि के रूप में श्री बसंतभाई दोसी, श्री हितेन ए.सेठ, श्री अक्षयभाई दोसी, श्री अजित भाई बड़ौदा, श्री बी.डी.जैन, श्री मणिभाई करिया, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित विपिन शास्त्री मुम्बई, पं. जिनेश शास्त्री आदि अनेक गणमान्य श्रेष्ठियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में पाठशाला की दस वर्षों की यात्रा की वीडियो प्रस्तुति दी गई। साथ ही पाठशाला के भूतपूर्व और वर्तमान विद्याथियों द्वारा दो प्रभावशाली प्रेरक नाटकों का मंचन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन मेघा शाह द्वारा किया गया। मण्डल प्रमुख श्री अशोक भाई शाह के मार्गदर्शन में सभी अतिथियों का परिचय के साथ सन्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत रोचक और प्रेरणादायी रहा।

हिंगोली - श्री शांतिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर हिंगोली द्वारा पन्द्रहवाँ आध्यात्मिक बाल-युवा-प्रौढ़ शिविर एवं नवलब्धि विधान सानन्द सम्पन्न हुआ। स्थानीय श्री महावीर भवन के विशाल प्रागंण में आयोजित इस कार्यक्रम में विधान के साथ युवा विद्वान बाल ब्र. प्रीतेशजी कोठारी एवं बाल ब्र. श्रुतिकाजी कोठारी पंढरपुर द्वारा जैन ज्योतिष के आधार पर सूर्य, चन्द्र, तारे आदि के स्वरूप पर सुन्दर कक्षा ली गई। श्री विराग शास्त्री द्वारा नवलब्धियों पर व्याख्यान हुये। रात्रि में कक्षाओं के पश्चात् विराग शास्त्री द्वारा की जाने वाली संगीतमय पौराणिक कथा से विशेष लाभ मिला। इस शिविर में श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्री अमोल महाजन परभणी, श्री अभिषेक शास्त्री सागर, अनुभव शास्त्री खनियांधाना आदि विद्वानों ने कक्षायें लीं। दिनांक 12 जून को भगवान शांतिनाथ के जन्मकल्याणक के अवसर पर पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया।

विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम अमोल शास्त्री के निर्देशन और विराग शास्त्री और विवेक शास्त्री सागर के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुये। - मिलिन्द यंबल

पंचम गुरुवाणी मन्थन शिविर सम्पन्न

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना स्थली तीर्थधाम सोनगढ़ में दिनांक 13 मई से 17 मई तक पंचम गुरुवाणी मन्थन शिविर का सफल आयोजन किया गया। कहान शिशु विहार के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में गुरुदेवश्री के प्रवचनों के आधार पर विश्लेषण करते हुये पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित श्री चेतनभाईजी राजकोट, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया और पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री महीपाल ज्ञायक के मार्गदर्शन एवं श्री विराग शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुये।

संस्था की गतिविधियों में निम्न साधर्मियों का अर्थ सहयोग प्राप्त हुआ -

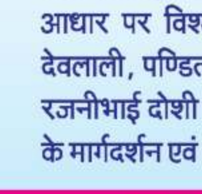

- श्री 1008 महावीर सांस्कृतिक लोक कल्याण मण्डल, गुलबर्गा (कर्नाटक) 8000/-
- श्रीमति रितु अतुल झांझरी, चंद्रपुर (महा.) 7000/-
- पूर्णिमा उल्लास भाई जोबालिया, मुंबई 5000/-
- अंशुल जैन, पुणे 4000/-

एक शिविर ऐसा भी

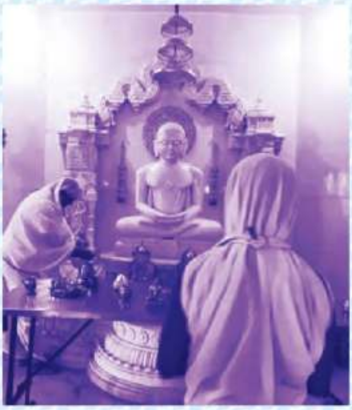

सफेद परिधानों से अनुशासित आबाल-गोपाल और साधर्मी बहनें। ऐसा लगे जैसे शांत भाव से आत्मार्थियों का मेला चला जा रहा हो। बाल संस्कार शिविर के प्रथम दिन आयोजित बाल संस्कार प्रभात फेरी का विहंगम दृश्य, अनुशासित कतारबद्ध बालक-बालिकाओं, हाथों में संस्कारप्रेरक संदेश और हर चेहरे पर उत्साह और उमंग की चमक। नीलगगन में ध्वजारोहण के साथ शंखनाद हुआ मंगल शिविर का। प्रातःकाल योग और प्रार्थना से दिन की शुरुआत, जिनेन्द्र में धवल वस्त्रों में भक्ति से सराबोर पूजन और ध्यान का अद्भुत प्रयोग। पूजन के प्रश्न के उत्तर में तत्पर नन्हे- नन्हे हाथ। कक्षाओं में समय पर पहुँचने को आतुर बच्चे, सामूहिक कक्षा में विद्वानों के हर शब्द को ग्रहण करने की अपूर्व ललक। भोजनालय में जिनेन्द्रभगवान के स्मरणपूर्वक शांतभाव से बैठकर भोजन ग्रहण करते बच्चे।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति में ऐसा शायद ही कोई हाथ हो जो तालियों से जिनेन्द्र भगवान की वीतरागता की अनुमोदना न कर रहा हो, एक आत्मविश्वास जो उनके जीवन में परिवर्तन ला सकता है।समर्पित युवा विद्वानों के श्रम से तैयार सांस्कृतिक कार्यक्रम और संगीतमय कथा का ऐसा वातावरण, लगे मानो कथा के पात्र सामने ही हों। मंच पर न कोई आडम्बर, न धन का उल्लेख।

सफल हुई कार्यकर्ताओं की महीनों की साधना और सम्पन्न हुआ यह अकलूज का शिविर। यह कहानी है अकलूज में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मण्डल द्वसरा आयोजित द्वारा बाल संस्कार शिविर की। दिनांक 2 जून से 7 जून तक आयोजित बाल संस्कार शिविर ऐतिहासिक सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 300 बालक-बालिकाओं ने सहभागिता की। मागदर्शन प्राप्त हुआ आत्मार्थी विद्वान बाल ब्र. जीतूभाई और बाल ब्र. वीतराग भाई का और निर्देशन श्री विराग शास्त्री का। सचमुच यह प्रेरणादायी शिविर अन्य शिविरों के लिये मिसाल बन गया। श्री आशीष शास्त्री टीकमगढ़, श्री विवेक शास्त्री सागर, श्री अमोल महाजन परभणी, श्री मन्थन शास्त्री मुम्बई, श्री अभिषेक शास्त्री सागर, श्री चेतनभाई दोशी नातेपुते, श्री श्रेणिक शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों ने जिनदेशना को बच्चों को हृदयगंम कराने का प्रयास किया।

ट्रस्ट के विशेष सहयोग से चहकती चेतना बाल पत्रिका के 80 नवीन सदस्य बने।

- जवाहर दोशी, मंत्री / संजय शाह, नियोजक

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

Paytm

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटएप / करें।

सदस्य कृपया ध्यान देवें - चहकती चेतना की सदस्यता क्रमांक 2408 से 2600 तक की सदस्यता समाप्त हो रही है। इन सदस्यों से निवेदन है कि आप सदस्यता शुल्क भेजें अन्यथा आगे से चहकती चेतना भेजना संभव नहीं होगा।

भारत के स्वाधीनता संग्राम में प्रमुख जैन शहीद

● **श्री अमरचंद बाठिया,** ग्वालियर - 22 जून 1858 - फांसी ● **श्री हुकुमचंद जैन,** हांसी (हरियाणा) 19 जनवरी 1858 - फांसी ● **श्री मोतीचंद जैन** (मध्यप्रदेश) - 1915 - फांसी ● **श्री उदयचंद जैन,** मण्डला - 1942 - अंग्रेज पुलिस की गोली से मौत ● **श्री साबूलाल वैशाखिया**, गढ़ाकोटा सागर - 22 अगस्त 1942 - अंग्रेज पुलिस की गोली से मौत ● **श्री नत्थालाल शाह,** अहमदाबाद - 1943 - जेल में मृत्यु ● **कु. जयावती संघवी,** अहमदाबाद-1943 - आसू गैस के प्रभाव से मृत्यु, **श्री कांधीलाल मटरूलाल जैन** 1930 - जंगल सत्याग्रह में मौत ● **श्री मगनलाल ओसवाल**, इंदौर 1942, **श्री अण्णपा अण्णानस्कुरे** - कोल्हापुर, ● **श्री भैयालाल चौधरी** दमोह ● **श्री चौथमल भंडारी**, उज्जैन, **पं.भूपाल जैन** महाराष्ट्र, **श्री भारमल जी** एवं **श्री हरिशचंद दगदोवा** आदि शहीद हुये । सभी शहीदों को नमन...

- डॉ. आशीष शास्त्री, दमोह

बोलते चित्रों का परिचय

1. आम आदमी को अपने काम के लिये लाइन में लगना पड़ता है और धनवान व्यक्ति धन के बल पर अपना काम पहले करवा लेता है।
2. अपराधी धन के बल पर जेल जाने से बच जाते हैं।
3. बड़ी-बड़ी फैक्टियों द्वारा गन्दगी नदियों में बहाकर प्रदूषण फैलाया जा रहा है और सामान्य व्यक्ति को छोटे अपराध पर दण्ड मिल रहा है।
4. सफलता का सबसे सरल उपाय - अपने बॉस की चाटुकारिता करो, चाहे वह गलत ही क्यों न हो ?
5. माँ - बाप अपनी सुविधायें छोड़कर बच्चों के सुन्दर भविष्य के लिये जीवन अर्पण करते हैं।
6. धन संग्रह करने की दौड़ में भागता हर इंसान और धन जोड़ने में मृत्यु की नजदीक आ रही है - कुछ विचार नहीं।

मैगी की नूडल्स में छिपकली के अंश : सरकारी रिपोर्ट में पुष्टि

जांच में साबित हुआ कि नूडल्स में थी छिपकली

एनएबीएल की लैब में पांच पैमानों पर की सैम्पल की जांच, जानी-मानी मल्टीनेशनल कंपनी का है नूडल्स

जिस मैगी को पूरे देश में बहुत शौक से खाया जाता है उस मैगी में छिपकली के अंश मिलने की पुष्टि हुई है। जबलपुर निवासी संदीप सिंह ने नैसले कम्पनी की मैगी ब्रांड के नूडल्स के पैकेट खरीदे थे। जब उसने घर में मैगी बनाई तो उसे नूडल्स में छिपकली के हिस्से होने का संदेह हुआ। वह पकी हुई और बची हुई नूडल्स लेकर दुकानदार के पास गया उसने छिपकली होने से मना कर दिया। इस पर संदीप ने पकी पकाई मैगी और शेष बची पैकेट की मैगी नूडल्स लेकर खाद्य एवं औषधि विभाग में शिकायत की। खाद्य विभाग ने पकी हुई और कच्ची मैगी दोनों का सेम्पल लेकर शहर एनएबीएल की लैब में जांच के लिये भिजवाया जिससे प्राप्त रिपोर्ट में स्पष्ट हो गया कि संदीप की शिकायत सही थी। खाद्य अधिकारी अमरीश दुबे ने बताया कि जांच में दोंनो ही नूडल्स में छिपकली के अंश पाये गये। उन्होंने बताया कि इन सेम्पल की जांच एफएसएसएआई मैनुअल 2016 के आधार से पाँच स्तर पर की गई। दोनों ही सेम्पल में एक्ट्रेनियस मैटर, इन्सेक्ट डेमेज्ड मैटर, रोडन्ट हेयर, एक्सक्रीटा और सेण्ड, डर्ट, क्ले, स्टोन, ग्रेवल्स, वब्स आदि की जांच की गई। जिसके आधार पर नूडल्स में छिपकली के अंश पाये जाने की पुष्टि हुई।

- दैनिक भास्कर समाचार पत्र 6 अप्रैल 2018 से साभार

जिसका बाकी आयु कर्म मार सके न कोय

पारिवारिक झगड़े से परेशान यह महिला अपने 9 माह के बच्चे को लेकर मरने के लिये ट्रेन की पटरी पर लेट गई । ट्रेन अपनी पूरी रफ्तार से निकली पर इस महिला और बच्चे को खरोंच भी नही आई

लाचारी : पति ने तलाक दिया तो डेढ़ माह के बेटे के साथ ट्रैक पर लेटी; 100 की स्पीड से ट्रेन गुजरी, शुक्र है... खरोंच तक नहीं आई

टीवी

देखो टीवी पाप बढ़ाती, एक रोग का नाम है पाती।
नहीं धर्म की बात बताती, आंख दुखाती समय नशाती।
भोग वासना कषाय बढ़ाती, सबका यह उपयोग नशाती।
विरले ही इससे बच पाते, पाँच पाप का कारण बनती।
लाभ नहीं इससे कुछ भाई, भोगी मन को यह भाती।।
थोड़ी काम की बातें देखो, ज्यादा देखें पागल मानो।।

चतुराई

खड़े-खड़े मत खाना भाई।
बात नहीं अच्छी यह भाई।
भोजन गिरता जीव हैं आते,
इसमें हिंसा है अति भाई।
नहीं सभ्यता संस्कार हमारे,
न इसमें गौरव है भाई।।
न भोजन होता है ढंग से,
न भोजन पचता है भाई।
शांत भाव से बैठकर भोजन,
इसमें ही सबकी चतुराई।।

बच्चों के ब्रश से....

जन्म दिवस की शुभकामनायें

श्री जिनवर की **स्तुति**, करती भव दुःख अन्त।
यही भावना जन्म दिवस पर, खिले मुक्ति अरविन्द।।

स्तुति अरविन्द जैन, 5 मार्च 2018

आत्म तत्व का **मनन** हो, इसका ही हो ध्यान।
देव-शास्त्र-गुरू भक्ति हो, हो दुःख का अवसान।।

मनन कौशिक शाह, घाटकोपर, मुम्बई 27 जुलाई 2018

श्री श्रेयांस की दिव्य ध्वनि, आत्म निधि दातार।
आत्म **तत्व** की श्रद्धा ही, शिवसुख की दातार।।

तत्व श्रेयांस वाधर, जामनगर गुज. 6 अगस्त 2018

नायशा जिनकुल मिला, मिला मुक्ति वरदान।।
जीवन संयममय जियो, होवे आत्म कल्याण।।

नायशा : नम्रता अमित जैन, 18 मई 2018

उपशम भाव में ही मिले, जिनवाणी का ज्ञान।
तिलक होय जिनमार्ग में, पाना पद निर्वाण।

उपशम तिलक चौधरी, किशनगढ़ 30 सितम्बर 2018

तारण अपना जिनधरम, करे सफल सब काम।
जन्म दिवस पर भावना, हो शिवपुर विश्राम।।

तारण राहुल किनी, अमेरिका 9 जून 2018

स्वर्ण रजत सब वस्तुयें, पुद्गल के ही भेद।
स्वर्ण आत्म की कान्ति हो, पाओ पद निर्वेद।।

स्वर्ण रजत बड़जात्या, रतलाम 29 अप्रैल

अवश्य पधारिये   मंगल महोत्सव   मंगल आमंत्रण

उत्तरप्रदेश की प्रसिद्ध पर्यटन नगरी आगरा के अन्तर्गत जैतपुरकलां में आयोजित

श्री १००८ नेमिनाथ

दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव

रविवार, 3 मार्च से शुक्रवार, 8 मार्च 2019 तक

स्थान : जैतपुरकलां तहसील - बाह जि. आगरा उ.प्र.

विशेष आकर्षण :

- नवीन जिनमंदिर की भव्य प्रतिष्ठा
- आत्मा से परमात्मा बनने की विधि का प्रत्यक्ष दर्शन
- देश के उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचनों का लाभ
- इंद्रसभा - राजसभा का भव्य प्रदर्शन

- जन्मकल्याण के अवसर पर विशेष - रत्नजड़ित भव्य पालना झूलन, साधर्मी वात्सल्य मिलन

प्रतिष्ठाचार्य : यशस्वी प्रतिष्ठा शिरोमणि
बाल ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली
निर्देशक : पण्डित रजनी भाई दोशी, हिम्मतनगर गुज.
मंच संचालक : पण्डित संजयजी शास्त्री, मंगलायतन

निवेदक : प्रेमचन्द बजाज, कोटा
संयोजक : नागेश जैन, पिड़ावा राज. : 9414687131

सम्पर्क : नीरज जैन, जैतपुरकलां : 9411204206 अमित अरिहंत, मंडावरा : 8442074031

जन्म दिवस की शुभकामनायें

सचित- रचित का जन्म दिन, हो बधाई स्वीकार।
जिनश्रुत में प्रज्ञा लगे, जीवन हो साकार।।
सचित कान्ति जैन, दुर्ग 16-7-13 / रचित कान्ति जैन, दुर्ग 19-8-16

महाभाग्य हमको मिले, वीतराग भगवन्त।
आत्म कला में सक्षम होकर, करना भव दुःख अन्त।
सक्षम पहाड़िया, इंदौर 7 जून 2018